परिशिष्ट - एक

आधार ग्रंथ

उपन्यास --

१ पचपनखम्भे लाल दीवारें - उषा प्रियंवदा - राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली, चतुर्थ सं., १९८४

२ रुकोगी नहीं,.. राधिका ? - उषा प्रियंवदा - अक्षर प्रकाशन नई दिल्ली, पाँचवा सं., १९८०

३ शेषायात्रा - उषा प्रियंवदा - राजकमल प्रकाशन प्रथम संस्करण -१९८४ नई दिल्ली

कहानी - संग्रह --

१ जिंदगी और गुलाब के फूल - उषा प्रियंवदा - भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, वाराणसी

२ कितना बड़ा झूठ - उषा प्रियंवदा - राजकमल प्रकाशन तृतीय संस्करण -१९७६ नई दिल्ली

३ एक कोई दूसरा - उषा प्रियंवदा - अक्षर प्रकाशन, द्वितीय संस्करण-१९८६ नई दिल्ली

४ मेरी प्रिय कहानियाँ(कहानी संकलन) उषा प्रियंवदा - राजपाल एण्ड सन्स, प्रथम संस्करण-१९७४ नई दिल्ली

परिशिष्ट - दो

(अ) सहायक ग्रंथों की सूची

ग्रंथ का नाम	लेखक	प्रकाशन वर्ष -संस्करण
१ प्रेमचंद परंपरा की कहानियों में पारिवारिक एवं सामाजिक चित्रण	डॉ. राजेंद्रकुमार शर्मा	प्रगति प्रकाशन, आगरा प्रथम संस्करण-१९८४
२ हिन्दी उपन्यास सामाजिक चेतना	डॉ. कुँवरपाल सिंह	पांडुलिपि प्रकाशन, दि प्रथम संस्करण-१९७६
३ समाज (हिन्दी अनुवाद)	मॅकाइवर एवं पेज अनुवादक - जी विश्वेश्वरैया	रत्न प्रकाशन मंदिर प्रथम संस्करण-१९६४
४ सामाजिक तथा सांस्कृतिक मानवशास्त्र	तिलारा कुँवरसिंह एवं जायसवाल	प्रकाशन केंद्र , लखनऊ - सं. १९८२
५ समाजशास्त्र एक विधिवत विवेचन (हिन्दी अनुवाद)	हेरी-एम.जॉन्सन अनुवादक -योगेश अटल	कल्याणी पब्लिशर्स - लुधियाना-दिल्ली प्रथम संस्करण-१९७०
६ हिन्दी उपन्यास: एक अंतर्यात्रा	डॉ. रामदशरथ मिश्र	राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली, प्रथम संस्करण-१९६८
७ हिन्दी उपन्यास	सुरेश सिन्हा	लोकभारती प्रकाशन इलाहाबाद द्वितीय संस्करण-१९७
८ प्रारम्भिक समाजशास्त्र	डॉ. एस. एम. कपूर	चित्रा प्रकाशन, मेरठ पंचम संस्करण-१९७९

ग्रंथ का नाम	लेखक	प्रकाशन वर्ष-संस्करण
९ स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी उपन्यास साहित्य की समाजशास्त्रीय पृष्ठभूमि	डॉ. स्वर्णलता	विवेक पब्लिशिंग हाऊस, जयपुर प्रथम संस्करण-१९७५
१० समाज और राज्य: भारतीय विचार	डॉ. सुरेन्द्रनाथ मीतल	हिंदुस्तान एकेडेमी प्रथम संस्करण-१९६७
११ हिन्दू संस्कार	डॉ. राजबली पाण्डेय	चौखम्बा, विद्याभवन वाराणसी, २२१ ००१
१२ विवेक के रंग	देवीशंकर अवस्थी	भारतीय ज्ञानपीठ वाराणसी-१९८५
१३ स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कथा लेखिकाएँ	उर्मिला गुप्ता	राधाकृष्ण प्रकाशन, भोपाल, प्रथम संस्करण-१९६७
१४ हिन्दी के लघु उपन्यास	घनश्याम 'मधुप'	राधाकृष्ण प्रकाशन, भोपाल-१९७१
१५ साठोत्तरी हिन्दी उपन्यास	पारसकान्त देसाई	सूर्य प्रकाशन, दिल्ली-६ प्रथम संस्करण-१९८४
१६ आधुनिक हिन्दी उपन्यास और अजनबीपन	विद्याशंकर राय	सरस्वती प्रकाशन इलाहाबाद प्रथम संस्करण-१९८१

ग्रंथ का नाम	लेखक	प्रकाशन वर्ष-संस्करण
१७ हिन्दी उपन्यासों में नारी	डॉ. शैल रस्तोगी	विभू प्रकाशन, साहिबाबाद, प्रथम संस्करण-१९७७
१८ समकालीन कहानी युगबोध का संदर्भ	डॉ. पुष्पपाल सिंह	नेशनल पब्लिशिंग हाऊस नयी दिल्ली, प्रथम संस्करण -१९८६
१९ अस्तित्ववाद और नई कहानी	लालचन्द गुप्त 'मंगल'	शोधप्रबंध प्रकाशन दिल्ली-७ प्रथमसंस्करण- १९७५
२० हिन्दी उपन्यास समाज और व्यक्ति का द्वन्द्व	डॉ. मंजुला गुप्ता	सूर्य प्रकाशन, दिल्ली-६ प्रथम संस्करण-१९८६
२१ समस्यामूलक उपन्यासकार-प्रेमचंद	डॉ. महेन्द्र भटनागर	ज्ञानभारती प्रकाशन दिल्ली- संस्करण-१९८२

(आ)

पत्रिकायें

(१) सारिका - प्रथम पाक्षिक - जुलाई - १९८४

(२) सारिका - अप्रैल - १९८५

(३) सारिका - प्रथम पाक्षिक - नवंबर - १९८३

(४) ज्ञानोदय - अगस्त १९६९ (भारतीय ज्ञानपीठ, काशी)

(५) धर्मयुग - २२ नवंबर अंक १९७० (टाइम्स ऑफ इंडिया प्रकाशन, बंबई)

इ) पत्र :- अपने इस लघु शोध-प्रबंध को पूरा करने के लिए मैंने कुछ साहित्यकारों से पत्र-व्यवहार किया था। अपने प्रयास को प्रस्तुत पत्रों के रूप में प्रस्तुत कर रही हूँ। —

UNIVERSITY OF, WISCONSIN
Department of South Asian Studies
South Asian Area Center
1242 Van Hise Hall, 1220 Linden Drive
Madison, Wisconsin 53706

3 फ़रवरी.

प्रिय श्रीजयश्री,

आपके पत्र का उत्तर देने में देरी हुई। आशा है आपका प्रबंध अब तक निकला होगा. मेरे साहित्य में प्रतिबिंबित समाज, विषय आपने सोचकर चुना है क्योंकि लिखते समय मुझमें यह ध्यान नहीं रहता कि समाज का चित्रण कैसा हो या चाहिए, क्योंकि मेरा ध्यान तो व्यक्ति पर रहता है, समाज के संदर्भ में व्यक्तित्व का विकास। प्रायः मेरे पात्र समाज या रूढ़िवाद से कटे रहते हैं। फिर भी यदि किसी बिंदु से प्रारंभ ही करना है तो उपन्यासों से ही कीजिये। 'पचपन खंभे, लाल दीवारें' की सुषमा समाज को कटु, critical और बौद्धिक लगती पाती है, पर वह चाहने पर भी उससे कटकर अलग नहीं हो पाती, यद्यपि उसका सारा समाज की दीवारों के बाहर ही है।

रुकोगी नहीं, राधिका उपन्यास व्यक्ति केंद्रित है। राधिका समाज से जुड़ी नहीं है, कटकर अलग हो चुकी है। बाद में जब वह अध्याय को जुड़ना चाहती भी है तब अध्याय उसे स्वीकार करने में अपने को

असमर्थ पाता है क्योंकि वह अभी पुराने विचारों से आज़ाद नहीं हुआ है। 'शोधयात्रा' की अनुका एक victim है, भारतीय और अमरीकी वातावरण में रहते हुए भारतीयों की रूढ़ियों से। स्त्री होने के नाते उसे अपने जीवन पर कन्ट्रोल नहीं है, उसका पुरुष से विवाह + तलाक पुरुष की इच्छानुसार है। तलाक शुदा स्त्री होने के कारण लांछन भी उसी को झेलने पड़ते हैं।

उपन्यासों में समाज के बाद M.Phil के दूसरे भाग में आप कहानी संग्रहों को लीजिये। उसमें मेरी अपनी धारणाओं के विकास और परिवर्तन से समाज के चित्रण में भी परिवर्तन आया ही है।

आशा है आपके मार्गदर्शन में यह सुझाव सहायक होगा। मेरे व्यक्तिगत जीवन, या जीवन परिचय की आपको आवश्यकता नहीं पड़ेगी. लेखक को लेखन के माध्यम से भी जाना जा सकता है।

कोई और प्रश्न हो तो अगले पत्र में लिखें —

सस्नेह

उषा प्रियंवदा